Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

बोलचाल की हिंदी और मानक हिंदी के बीच अंतर क्या है, तथा इनका समाज और बच्चों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?

Ms. Aarti Rathod, Unnati Bhadoriya, Muskan Shaikh, Bhumi Agrawal, Takshraj Dabhi

1. भूमका

भाषा मानव जीवन का एक महत्वपूण भाग है। भाषा केवल बोलने या लखने का माध्यम नह है, बल्क यह लोग को सोचने, संसार को समझने और अपने भाव व्यक्त करने म भी मदद करती है। बचपन से ही भाषा ब क सोच, सीखने क क्षमता और संवाद कौशल को आकार देती है। व्यक्त जन शब्द का प्रयोग करता है और जस प्रकार बोलता है, उसका प्रभाव उसके वचार , व्यवहार और समझ पर पड़ता है।

भाषा समाज और संस्कृत को भी गहराई से प्रभावत करती है। भाषा के माध्यम से ही लोग अपनी परंपराएँ, मूल्य और ान एक-दूसरे तक पँचाते ह।

अलग-अलग पर तय म भाषा के अलग-अलग रूप का प्रयोग कया जाता है। औपचारक भाषा का उपयोग वालय , पुस्तक और सरकारी काय म होता है, जबक अनौपचारक भाषा का प्रयोग परवार और म के साथ दैनक बातचीत म कया जाता है। दोन ही प्रकार क भाषा महत्वपूण ह क्य क वे अलग-अलग प्रकार के संवाद म सहायता करती ह। भाषा का प्रभाव केवल ब तक ही सीमत नह है, बल्क वयस्क पर भी पड़ता है। व्यक्त जस प्रकार क भाषा का प्रयोग करता है, वह उसक सोच और अपने वचार को व्यक्त करने क क्षमता को प्रभावत करती है। ब के लए भाषा वशेष रूप से महत्वपूण है, क्य क यह उनक शब्दावली, सोचने क शक्त और आत्मवास के वकास म सहायक होती है। घर, वालय और समाज म ब को जस प्रकार क भाषा सुनने को मलती है, वह उनके सीखने और वकास म महत्वपूण भूमका नभाती है। अधकांश भाषाओं के एक से अधक रूप होते ह। सामान्यतः एक सरल और दैनक जीवन म प्रयुक्त होने वाला रूप होता है तथा दूसरा औपचारक और शुद्ध रूप होता है। यह अंतर भाषा को वभन्न पर तय के अनुसार ढलने म मदद करता है। हद भाषा म भी यह अंतर स्पष्ट रूप से दखाई देता है। बोलचाल क हद का प्रयोग दैनक जीवन म कया जाता है, जबक मानक (शुद्ध) हद का प्रयोग शक्षा, साहत्य और सरकारी काय म होता है। यह इन मुख्य बात पर आधारत है:

बोलचाल क हद और कताब क हद अलग-अलग होती ह। इनका फक लोग क बात-चीत और संस्कृत पर असर डालता है। दोन तरह क हद सुनने और सीखने से ब क भाषा, सोच और पढ़ाई पर प्रभाव पड़ता है।

यह चत्र भारत क भाषाई ववधता को दशाता है। इसम अलग-अलग भाषाएँ और उनक कई बोलयाँ एक वृत्त के रूप म दखाई गई ह। यह हम दखाता है क भारत एक ऐसा देश है जहाँ बहुत सारी भाषाएँ और बोलने के तरीके मौजूद ह। हर राज्य, हर ेत्र, और यहाँ तक क एक ही राज्य के अलग-अलग हस्स म भी भाषा का रूप बदल जाता है। इस ववधता का ब पर सीधा प्रभाव है। बे सबसे पहले वही भाषा सीखते ह जो वे अपने घर और आसपास के लोग से सुनते

ह। यह भाषा आमतौर पर बोलचाल क होती है, जो सरल और रोज़मरा म इस्तेमाल क जाती है। इसलए बे बोलचाल क हद को जल्द समझ लेते ह और उसे आसानी से बोल भी
पाते ह।

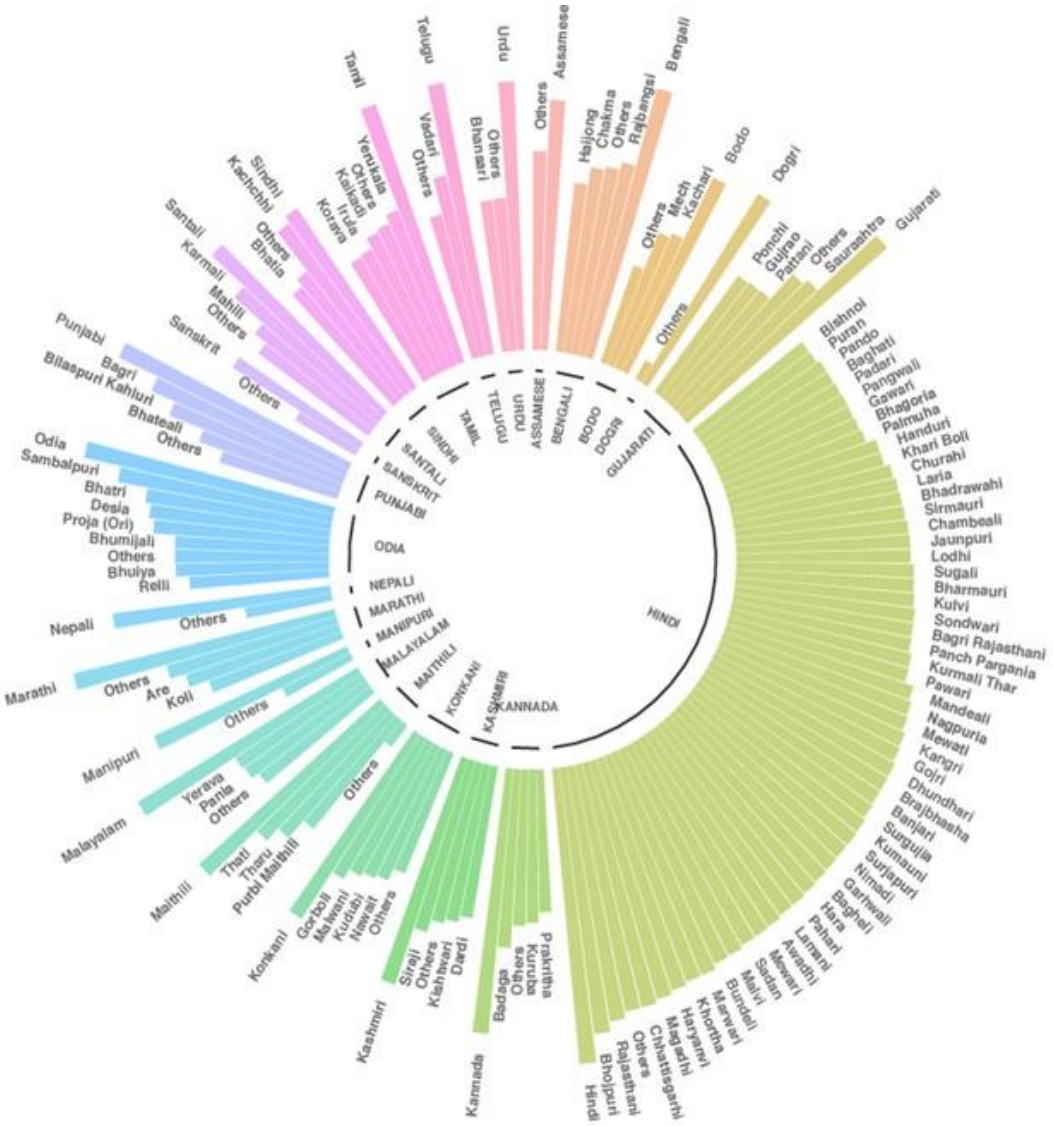

दूसरी ओर, शुद्ध हद अधक औपचारक और कठन होती है। इसम कठन शब्द, ाकरण के नयम और ऐसे वाक्य होते ह जो रोज़मरा क भाषा से अलग होते ह। जब ब को अचानक शुद्ध हद सखाई जाती है, तो उन्ह उसे समझने म परेशानी हो सकती है। इससे उनका आत्मवास भी कम हो सकता है और पढ़ाई म रुच भी घट सकती है। इसके अलावा, भाषाई ववधता के कारण कई बार बे अपनी ानीय भाषा और स्कूल क भाषा के बीच अंतर महसूस करते ह। घर पर वे एक खास तरह क हद या अपनी ेत्रीय भाषा बोलते ह, जबक स्कूल म उन्ह शुद्ध हद या मानक भाषा सखाई जाती है। यह अंतर उनके सीखने क प्र या को थोड़ा कठन बना सकता है। इसलए यह बहुत जरूरी है क ब को सखाने के लए शुरुआत म सरल और बोलचाल क भाषा का उपयोग कया जाए। इससे वे आसानी से समझ पाएंगे और धीरे-धीरे शुद्ध हद भी सीख सकगे। अगर भाषा को ब के स्तर के अनुसार रखा जाए, तो उनका आत्मवास बढ़ता है और वे सीखने म अधक रुच दखाते ह।

2.1 : बोलचाल क हद और मानक हद का स्वरूप एवं ऐतहासक वकास

मानक हद का वकास भाषा के एक औपचारक और संरचत रूप के रूप म हुआ। इसक जड़ शास्ीय और साहत्यक परंपराओं म मलती ह, जहाँ ाकरण, सही वाक्य-रचना और संस्कृतनष्ठ शब्दावली को वशेष महत्व दया जाता था। मानक हद का प्रयोग मुख्य रूप से शक्षा, साहत्य, प्रशासन और सरकारी काय म कया जाता था। इसने वभन्न क्षे म भाषा क एकरूपता बनाए रखने म सहायता क और इसे ान व शुद्धता का प्रतीक माना गया। समय के साथ समाज म परवतन हुआ और लोग क भाषा-प्रयोग क शैली भी बदलने लगी। दैनक जीवन म लोग ने सरल और स्वाभावक ढंग से बोलना अधक पसंद कया। इसी कारण बोलचाल क हद का वकास हुआ। बोलचाल क हद मानक हद और क्षेीय बोलय से मलकर बनी, जब लोग ने भाषा को रोज़मरा के संवाद के अनुसार ढालना शुरू कया। इसम ानीय भाषाओं, उ तथा बाद म अंेज़ी के शब्द भी शामल होने लगे, जससे भाषा अधक सहज और भावपूण बन गई।

शहर के वस्तार तथा जनसंचार माध्यम जैसे फल्म , रेडयो, टेलीवजन और सोशल मीडया के प्रसार के साथ बोलचाल क हद का प्रयोग और अधक बढ़ गया। लोग ाकरण के कठोर नयम क अपेक्षा संवाद क सरलता पर अधक ध्यान देने लगे। परणामस्वरूप, दैनक बातचीत म बोलचाल क हद प्रमुख रूप बन गई, जबक मानक हद का प्रयोग मुख्य रूप से औपचारक और शैक्षणक क्षे तक सीमत रह गया।

सहायक वचार: मानक हद से बोलचाल क हद क ओर हुआ यह ऐतहासक परवतन दशाता है क भाषा समाज क आवश्यकताओं के अनुसार बदलती रहती है। जहाँ मानक हद भाषा को संरचना और शुद्धता प्रदान करती है, वह बोलचाल क हद जीवंत संस्कृत और दैनक अनुभव को दशाती है। दोन ही रूप अलग-अलग उेश्य क पूत के लए वकसत हुए ह और आज भी आधुनक समाज म साथ-साथ प्रचलत ह।.

2.2 : समाज पर बोलचाल क हद और मानक हद का प्रभाव

भाषा समाज और सामाजक संबंध को आकार देने म महत्वपूण भूमका नभाती है। लोग जस प्रकार क भाषा का प्रयोग करते ह, उसका प्रभाव उनके दैनक जीवन के संबंध पर पड़ता है, जैसे परवार, मत्रता, सामाजक समारोह और सावजनक कायक्रम म। बोलचाल क हद का प्रयोग आमतौर पर अनौपचारक परस्थतय म कया जाता है, जैसे पाटय , दोस्त के साथ बातचीत और सामाजक मेलमलाप म। यह भाषा लोग को सहज महसूस कराती है और भावनात्मक रूप से जोड़ती है। कसी व्यक्त क भाषा उसक पहचान को भी दशाती है। व्यक्त जस प्रकार बोलता है, उससे उसके ेत्र, संस्कृत, शा स्तर और सामाजक वातावरण का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। बोलचाल क हद ेत्रीय संस्कृत और व्यक्तगत शैली को दशाती है, जबक मानक हद औपचारकता, शा और पेशेवर व्यवहार का प्रतीक मानी जाती है। इस प्रकार भाषा व्यक्त क पहचान व्यक्त करने का एक माध्यम बन जाती है।

भाषा औपचारक परस्थतय जैसे बैठक , कायालय और व्यवसायक स्थान म भी महत्वपूण भूमका नभाती है। इन स्थान पर मानक हद का प्रयोग कया जाता है, क्य क यह स्पष्ट, सम्मानजनक और व्यवस्थत होती है। इससे संवाद म भ्रम क संभावना कम होती है। हालांक, उसी कायस्थल पर अनौपचारक बातचीत के दौरान लोग आपसी संबंध बेहतर बनाने के लए बोलचाल क हद का प्रयोग करते ह। इससे यह स्पष्ट होता है क समाज म भाषा का प्रयोग परस्थत के अनुसार कया जाता है। भारत एक ववधताओं से भरा देश है और यह ववधता भाषा म भी दखाई देती है। बोलचाल क हद अलग-अलग ेत्र म भन्न रूप लेती है और उस ेत्र क स्थानीय भाषाओं और संस्कृत से प्रभावत होती है। इससे भारतीय संस्कृत और भी समृद्ध होती है। वह दूसरी ओर, मानक हद वभन्न ेत्र के बीच भाषा क एकता बनाए रखने म सहायक होती है, वशेष रूप से शा और रीय स्तर क चचाओं म। फल्म, टेलीवजन, मीडया और सोशल मीडया समाज म भाषा-प्रयोग को गहराई से प्रभावत करते ह। इन माध्यम म अधकतर बोलचाल क हद का प्रयोग कया

जाता है, क्य क यह आम लोग से जुड़ी हुई और स्वाभावक लगती है। इसके परणामस्वरूप बोलचाल के शब्द और अभव्यक्तयाँ तेज़ी से फैलती ह। इसके बावजूद, पाठ्यपुस्तक , परीाओं, समाचार और सरकारी संचार म मानक हद क भूमका आज भी महत्वपूण बनी हुई है, क्य क यह स्पष्टता और एकरूपता बनाए रखती है।

सहायक वचार: बोलचाल क हद और मानक हद मलकर समाज को संतुलत रूप से प्रभावत करती ह। जहाँ बोलचाल क हद संस्कृत, पहचान और दैनक संबंध को दशाती है, वह मानक हद औपचारक संवाद, शा और रीय समझ को मजबूत बनाती है। एक सुव्यवस्थत और जुड़े हुए समाज के लए दोन रूप का होना आवश्यक है।

2.3 : ब के भाषा-वकास पर भाषा वातावरण का प्रभाव

बे भाषा को मुख्य रूप से अपने आसपास के वातावरण से सीखते ह। घर, वालय और समाज म जस प्रकार क भाषा का प्रयोग होता है, उसका ब क सोच, संवाद क्षमता और भवष्य के वकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अलग-अलग भाषा वातावरण म पले-बढ़े ब का भाषा-वकास और दृष्टकोण भी अलग-अलग होता है।

जो बे ऐसे वातावरण म बड़े होते ह जहाँ अधकतर मानक हद का प्रयोग कया जाता है, वे सामान्यतः व्याकरण क अ समझ, वस्तृत शब्दावली और सही वाक्यरचना वकसत करते ह। ऐसे बे पढ़ने-लखने और शैक्षणक काय म अा प्रदशन करते ह। वे परीक्षाओं, भाषण और औपचारक पर तय म सहज महसूस करते ह। हालांक, कभी-कभी ऐसे ब को अनौपचारक बातचीत या सामाजक मेलजोल म कठनाई हो सकती है, क्य क उनक भाषा अधक औपचारक लग सकती है।

वह , जो बे ऐसे वातावरण म बड़े होते ह जहाँ अधकतर बोलचाल क हद का प्रयोग होता है, वे बोलने म अधक आत्मवासी होते ह। वे अपनी भावनाएँ आसानी से व्यक्त कर पाते ह और सामाजक पर तय म सहज रहते ह। ऐसे बे म और सामाजक समारोह म अा संवाद कर पाते ह। लेकन मानक हद का सीमत ान उनके लेखन कौशल, व्याकरण और शैक्षणक प्रदशन को प्रभावत कर सकता है। भवष्य म उन्ह औपचारक शक्षा या पेशेवर संवाद म कठनाई आ सकती है। जो बे ऐसे वातावरण म बड़े होते ह जहाँ बोलचाल क हद और मानक हद दोन का प्रयोग कया जाता है, उन्ह दोन प्रकार क भाषा के लाभ मलते ह। ऐसे बे यह समझ पाते ह क कस पर त म कौन-सी भाषा उपयुक्त है। उनम संतुलत संवाद क्षमता, स्पष्ट सोच और अनुकूलन क योग्यता वकसत होती है। भवष्य म वे सामाजक और शैक्षणक दोन प्रकार क पर तय म आत्मवास के साथ संवाद कर पाते ह। उनक सोच अधक लचीली और व्यावहारक होती है। **सहायक वचार:** बोलचाल क हद और मानक हद —दोन का संतुलत प्रयोग ब के भाषावकास, सोच और आत्मवास के लए अत्यंत आवश्यक है। यह उन्ह सामाजक जीवन और शैक्षणक या पेशेवर सफलता के लए बेहतर रूप से तैयार करता है।

3. शोध प्रश्न से अवधारणाओं का संबंध

इस शोध-पत्र का मुख्य प्रश्न यह है क बोलचाल क हद और मानक हद म क्या अंतर है तथा समाज और ब के भाषा-वकास पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। ऊपर प्रस्तुत सभी शोध अवधारणाएँ इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देती ह। पहली अवधारणा म यह समझाया गया क दोन प्रकार क हद का स्वरूप और ऐतहासक वकास अलग-अलग रहा है, जससे उनके उपयोग और उेश्य म अंतर आया। मानक हद संरचत, नयमबद्ध और औपचारक भाषा है, जबक बोलचाल क हद सरल, स्वाभावक और दैनक जीवन से जुड़ी हुई है।

दूसरी अवधारणा यह दशाती है क ये दोन रूप समाज को अलग-अलग तरीक से प्रभावत करते ह। बोलचाल क हद सामाजक संबंध , सांस्कृतक पहचान और दैनक संवाद को सहज बनाती है, जबक मानक हद

औपचारक संचार, शक्षा और रीय स्तर क बातचीत म एकता और स्पष्टता बनाए रखती है। इससे यह स्पष्ट होता है क समाज म भाषा का प्रयोग परस्थत के अनुसार बदलता है। तीसरी अवधारणा ब के भाषा-वकास पर क त है और यह बताती है क अलग-अलग भाषा वातावरण ब क सोच, संवाद क्षमता और भवष्य क दशा को प्रभावत करते ह। केवल एक प्रकार क भाषा का प्रयोग ब के वकास को सीमत कर सकता है, जबक बोलचाल क हद और मानक हद —दोन का संतुलत प्रयोग ब के समग्र वकास म सहायक होता है। इस प्रकार, सभी अवधारणाएँ मलकर यह सद्ध करती ह क बोलचाल क हद और मानक हद परस्पर वरोधी नह , बक एक-दूसरे क पूरक ह। दोन ही रूप समाज के संतुलत वकास और ब के भाषक व बौद्धक वकास के लए आवश्यक ह। यही संतुलन भाषा के समग्र और स्वस्थ वकास को सुन त करता है।

4. सारांश और संदभ

बोलचाल क हद सामाजक संबंध , सांस्कृतक अभव्यक्त और व्यक्तगत पहचान को मजबूत करती है। यह दैनक जीवन, सामाजक मेल-जोल और लोकप्रय माध्यम म सहज संवाद को बढ़ावा देती है। वह , मानक हद औपचारक संचार, शक्षा और रीय स्तर क चचाओं म स्पष्टता, अनुशासन और एकता बनाए रखती है। दोन रूप मलकर समाज म भावनात्मक जुड़ाव और सुव्यवस्थत संवाद के बीच संतुलन स्थापत करते ह। ब के भाषा-वकास पर इन दोन रूप के प्रभाव का अध्ययन इस शोध का एक महत्वपूण भाग रहा। केवल एक ही प्रकार क हद का प्रयोग ब के वकास को सीमत कर सकता है। इसके वपरीत, जो बे बोलचाल क हद और मानक हद —दोन के संपक म आते ह, उनम बेहतर भाषा-कौशल, स्पष्ट सोच और अनुकूलन क्षमता वकसत होती है। इससे वे सामाजक और शैक्षणक दोन प्रकार क परस्थतय म अधक आत्मवासी बनते ह। नष्कष रूप म कहा जा सकता है क बोलचाल क हद और मानक हद एक-दूसरे के वरोधी नह , बक एक ही भाषा के पूरक रूप ह। दोन ही व्यक्त और समाज के स्वस्थ वकास के लए आवश्यक ह। भवष्य क दृष्ट से, जैसे-जैसे मीडया और तकनीक भाषा-प्रयोग को प्रभावत कर रहे ह, वैसेवैसे अनौपचारक और औपचारक भाषा के बीच संतुलन बनाए रखना और भी महत्वपूण हो जाएगा। शक्षा और दैनक जीवन म दोन रूप के संतुलत प्रयोग से भाषा क समृ बनी रहेगी और हद क भूमका बदलते समय के साथ और भी सशक्त होगी।

5.शोध के उेश्य

इस शोध-पत्र का मुख्य उेश्य बोलचाल क हद और मानक हद के स्वरूप, उपयोग और प्रभाव का गहन अध्ययन करना है। भाषा केवल संचार का माध्यम नह है, बक यह व्यक्त क सोच, व्यवहार और व्यक्तत्व को भी आकार देती है। इसलए यह समझना आवश्यक है क हद के दोन रूप समाज और वाथय के जीवन म कस प्रकार क भूमका नभाते ह। इस अध्ययन का एक प्रमुख उेश्य यह स्पष्ट करना है क बोलचाल क हद और मानक हद म क्या मूलभूत अंतर है। जहाँ बोलचाल क हद स्वाभावक, सरल और दैनक जीवन म प्रयुक्त होती है, वह मानक हद व्याकरण-सम्मत, शुद्ध और औपचारक होती है। इन दोन
रूप क वशेषताओं को समझना वाथय के लए अत्यंत आवश्यक है। दूसरा उेश्य यह जानना है क समाज म इन दोन रूप का प्रयोग कन-कन ेत्र म कया जाता है। जैसे शा, प्रशासन और साहत्य म मानक हद का महत्व है, जबक परवार और मत्र के बीच बोलचाल क हद अधक प्रचलत है। इसके अतरक्त, यह शोध वाथय को यह समझाने का प्रयास करता है क भाषा का सही और संतुलत प्रयोग उनके भवष्य के लए कतना आवश्यक है। यद वे पर त के अनुसार भाषा का चयन करना सीख ल, तो वे सामाजक और शै क दोन ेत्र म सफलता प्राप्त कर सकते ह।

6.शोध क पद्धत

इस शोध को व्यव त रूप से तैयार करने के लए वभन्न पद्धतय का उपयोग कया गया। सबसे पहले साहत्यक और शैक्षक ोत का अध्ययन कया गया। हद व्याकरण क पुस्तक , पाठ्यपुस्तक और संदभ ंथ के माध्यम से मानक हद क संरचना, नयम और वशेषताओं को समझा गया। इससे यह स्पष्ट हुआ क मानक हद कस प्रकार व्याकरणक शुद्धता और औपचारकता को महत्व देती है। दूसरे चरण म दैनक जीवन म प्रयुक्त भाषा का अवलोकन कया गया। वालय म वाथय और शक्षक से बातचीत कर यह जानने का प्रयास कया गया क वे सामान्य पर तय म कस प्रकार क हद का प्रयोग करते ह। यह पाया गया क अधकतर वाथ म के बीच बोलचाल क हद का प्रयोग करते ह, जबक कक्षा म उत्तर देते समय मानक हद का उपयोग करने का प्रयास करते ह।

तीसरे चरण म मीडया और तकनीक माध्यम का वेषण कया गया। ट वी समाचार चैनल , धारावाहक , फल्म और सोशल मीडया प्लेटफॉम पर प्रयुक्त भाषा का अध्ययन कया गया। समाचार चैनल म मानक हद का प्रयोग अधक पाया गया, जबक फल्म और सोशल मीडया म बोलचाल क हद प्रमुख रूप से दखाई द । इससे यह स्पष्ट हुआ क आधुनक समाज म दोन रूप का अलग-अलग क्षे म व्यापक उपयोग है। इसके अतरक्त, तुलनात्मक वेषण क पद्धत अपनाई गई। दोन रूप के उदाहरण एक त कर उनके बीच व्याकरण, शब्दावली और शैली के आधार पर तुलना क गई। इससे उनके अंतर और समानताओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सका। अंत म, एक त तथ्य के आधार पर नष्कष तैयार कया गया। इस पद्धत ने शोध को अधक वश्वसनीय और संतुलत बनाया। वभन्न ोत से प्राप्त जानकारी के समन्वय के कारण यह अध्ययन व्यापक और तथ्यपरक बन सका।

7.समाज पर प्रभाव

भाषा समाज का दपण होती है। समाज म भाषा का प्रयोग केवल वचार व्यक्त करने के लए नह , बक संबंध को मजबूत बनाने के लए भी कया जाता है। बोलचाल क हद समाज म आत्मीयता और नकटता बढ़ाने का काय करती है। यह लोग को सहज बनाती है और भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करती है। परवार और म के बीच लोग सरल और अनौपचारक भाषा का प्रयोग करते ह। इससे संचार अधक प्रभावी और स्वाभावक बनता है। सामाजक समारोह , उत्सव और दैनक बातचीत म बोलचाल क हद प्रमुख रूप से दखाई देती है। यह भाषा समाज क जीवंतता और ववधता को दशाती है। वह दूसरी ओर, मानक हद समाज म अनुशासन और स्पष्टता बनाए रखने म सहायक होती है। सरकारी कायालय , न्यायालय , वालय और औपचारक कायक्रम म मानक हद का प्रयोग कया जाता है। इससे संचार म स्पष्टता रहती है और कसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न नह होता। मानक हद समाज क एकता और संरचना को मजबूत बनाती है। मीडया और तकनीक के प्रभाव से भाषा का स्वरूप बदल रहा है। सोशल मीडया ने बोलचाल क हद को अधक लोकप्रय बना दया है। लोग सं प्त और म त भाषा का प्रयोग करने लगे ह। हालांक इससे भाषा अधक लचीली बनी है, परंतु शुद्धता पर कभी-कभी प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार, समाज के संतुलत वकास के लए दोन रूप का महत्व है। यद बोलचाल क हद भावनात्मक जुड़ाव को बढ़ाती है, तो मानक हद औपचारक संचार को सशक्त बनाती है। दोन के संतुलत प्रयोग से समाज म सामंजस्य और एकता बनी रहती है।

8.वाथय के लए महत्व

वाथय के जीवन म भाषा का वशेष महत्व है, क्य क यही उनके ान, सोच और अभव्यक्त का आधार बनती है। मानक हद का ान वाथय को शुद्ध लेखन, व्याकरणक समझ और औपचारक अभव्यक्त म सक्षम बनाता है। परीक्षाओं म उत्तर लखते समय, भाषण देते समय या प्रतयोगी परीक्षाओं म भाग लेते समय मानक हद क आवश्यकता होती है।

बोलचाल क हद वाथय को आत्मवास देती है। म के साथ चचा करते समय या समूह-काय म भाग लेते समय यह भाषा उन्ह सहज बनाती है। इससे उनक संवाद-कौशल और सामाजक समझ वकसत होती है। यद वाथ केवल एक ही रूप तक सीमत रह, तो उनका वकास अधूरा रह सकता है। उदाहरण के लए, केवल बोलचाल क हद जानने वाला वाथ औपचारक लेखन म कठनाई अनुभव कर सकता है। वह केवल मानक हद तक सीमत वाथ अनौपचारक पर तय म सहज नह रह पाता। अतः यह आवश्यक है क वालय म दोन रूप का संतुलत ान दया जाए। शक्षक को वाथय को यह समझाना चाहए क कस पर त म कौन-सी भाषा उपयुक्त है। इससे वाथ न केवल शैक्षक रूप से सफल ह गे, बक सामाजक रूप से भी आत्मवासी बनगे।

9.भवष्य क संभावनाएँ

भाषा समय के साथ बदलती रहती है। तकनीक वकास, वैीकरण और मीडया के प्रसार के कारण हद भाषा म नरंतर परवतन हो रहा है। आजकल लोग हद म अंजी और अन्य भाषाओं के शब्द
का प्रयोग अधक करने लगे ह, जससे भाषा का एक म त रूप उभर रहा है।
भवष्य म संभव है क बोलचाल क हद का प्रभाव और बढ़े, क्य क यह सरल और सुवधाजनक लगती है। सोशल मीडया और डजटल प्लेटफॉम पर यही रूप अधक प्रचलत है। लेकन इसका अथ यह नह है क मानक हद का महत्व कम हो जाएगा। शक्षा, साहत्य, प्रशासन और आधकारक काय म मानक हद क आवश्यकता सदैव बनी रहेगी। यह भाषा क शुद्धता, स्पष्टता और एकरूपता को बनाए रखती है। यद मानक हद का संरक्षण नह कया गया, तो भाषा क संरचना कमजोर हो सकती है। इसलए भवष्य के लए यह आवश्यक है क हम दोन रूप के बीच संतुलन बनाए रख। भाषा क सरलता और शुद्धता दोन का सम्मान कया जाना चाहए। वालय , मीडया और परवार को मलकर यह प्रयास करना चाहए क हद भाषा का वकास संतुलत और सशक्त रूप म हो।
अंततः कहा जा सकता है क हद का भवष्य उज्ज्वल है, यद हम इसके दोन रूप को समझकर उनका उचत प्रयोग कर। संतुलत दृष्टकोण ही भाषा को समृद्ध और जीवंत बनाए रख सकता है।

10.बोलचाल क हद क वशेषताएँ

बोलचाल क हद हद भाषा का वह रूप है जसका प्रयोग लोग अपने दैनक जीवन म स्वाभावक रूप से करते ह। यह भाषा औपचारक नयम से बंधी नह होती, बक पर तय और ेत्र के अनुसार बदलती रहती है। यही कारण है क बोलचाल क हद म ववधता और लचीलापन पाया जाता है।
सबसे पहली वशेषता इसक सरलता है। बोलचाल क हद म लोग छोटे और आसान वाक्य का प्रयोग करते ह। कठन शब्द क जगह सामान्य शब्द का उपयोग कया जाता है ताक सामने वाला व्यक्त आसानी से समझ सके। उदाहरण के लए, औपचारक वाक्य “आप कहाँ जा रहे ह?” को बोलचाल म “तुम कहाँ जा रहे हो?” या “कहाँ जा रहे हो?” कहा जाता है।
दूसरी वशेषता ेत्रीय प्रभाव है। भारत के वभन्न राज्य म हद का उारण और शब्दावली अलग-अलग हो सकती है। जैसे गुजरात, राजान, उत्तर प्रदेश या बहार म बोली जाने वाली हद म ानीय शब्द का प्रभाव दखाई देता है। यह ववधता भाषा को जीवंत और समृद्ध बनाती है।
तीसरी वशेषता अन्य भाषाओं के शब्द का समावेश है। आजकल बोलचाल क हद म अंजी शब्द का प्रयोग बहुत सामान्य हो गया है, जैसे “टाइम”, “मोबाइल”, “होमवक”, “ऑनलाइन” आद। इससे भाषा आधुनक और प्रचलत बनती है, लेकन कभी-कभी शुद्धता पर प्रभाव भी पड़ता है।

चौथी वशेषता भावनात्मक अभव्यक्त है। बोलचाल क हद म व्यक्त अपने भाव, हास्य और ोध को आसानी से व्यक्त कर सकता है। इसम मुहावर और कहावत का प्रयोग अधक होता है, जससे भाषा प्रभावशाली बनती है।
अंततः, बोलचाल क हद समाज म आत्मीयता और सहजता को बढ़ाती है। यह लोग के बीच दूरी कम करती है और संवाद को सरल बनाती है। इसलए इसका महत्व अत्यंत अधक है।

11.मानक हद क वशेषताएँ

मानक हद हद भाषा का वह रूप है जो व्याकरण के नयम के अनुसार व्यव त और शुद्ध मानी जाती है। इसका प्रयोग औपचारक पर तय म कया जाता है, जैसे वालय,
कायालय, समाचार-पत्र, साहत्य और सरकारी काय। मानक हद क सबसे महत्वपूण वशेषता उसक व्याकरणक शुद्धता है। इसम शब्द का सही प्रयोग, सही वाक्य-वन्यास और उचत वराम-च का उपयोग कया जाता है। इससे भाषा स्पष्ट और प्रभावशाली बनती है। दूसरी वशेषता औपचारकता है। मानक हद का प्रयोग सम्मान और गंभीरता व्यक्त करने के लए कया जाता है। उदाहरण के लए, "आप कैसे ह?" मानक हद का रूप है, जबक "कैसे हो?" बोलचाल का रूप है। तीसरी वशेषता एकरूपता है। पूरे देश म मानक हद के नयम लगभग समान होते ह, जससे वभन्न ेत्र के लोग आसानी से एक-दूसरे को समझ सकते ह। यह रीय एकता को भी मजबूत बनाती है।
चौथी वशेषता साहत्यकता है। मानक हद का प्रयोग कवता, कहानी, नबंध और अन्य साहत्यक वधाओं म कया जाता है। इससे भाषा क सुंदरता और गहराई बढ़ती है।
इस प्रकार, मानक हद भाषा क शुद्धता और औपचारकता का प्रतीक है। यह शा और प्रशासन के लए अत्यंत आवश्यक है।

12.दोन रूप क तुलना

बोलचाल क हद और मानक हद दोन ही महत्वपूण ह, परंतु उनके प्रयोग और स्वरूप म स्पष्ट अंतर है। बोलचाल क हद अनौपचारक, सरल और लचीली होती है, जबक मानक हद औपचारक, शुद्ध और व्यवत होती है। बोलचाल क हद म व्याकरण के नयम का पालन आवश्यक नह होता। लोग परत के अनुसार शब्द को बदल देते ह। वह मानक हद म व्याकरण के नयम का सख्ती से पालन कया जाता है। शब्दावली के स्तर पर भी अंतर देखा जाता है। बोलचाल क हद म अंजी और अन्य भाषाओं के शब्द का प्रयोग अधक होता है, जबक मानक हद म शुद्ध हद शब्द को प्राथमकता द जाती है। प्रयोग-ेत्र क दृष्ट से भी अंतर है। बोलचाल क हद का प्रयोग परवार और मत्र के बीच होता है, जबक मानक हद का प्रयोग वालय, कायालय और औपचारक कायक्रम म कया जाता है। हालाँक दोन म अंतर है, परंतु ये एक-दूसरे के पूरक ह। यद दोन का संतुलत प्रयोग कया जाए, तो भाषा अधक प्रभावशाली बन सकती है।

13.नष्कष और सुझाव

इस शोध के आधार पर यह स्पष्ट होता है क बोलचाल क हद और मानक हद दोन का समाज और वाथय के जीवन म महत्वपूण ान है। दोन के बना भाषा का वकास अधूरा है।
सुझाव के रूप म यह कहा जा सकता है क वालय म वाथय को मानक हद का नयमत अभ्यास कराया जाए। साथ ही उन्ह यह भी समझाया जाए क बोलचाल क हद का प्रयोग कहाँ और कैसे करना उचत है। मीडया और सोशल मीडया को भी भाषा क शुद्धता पर ध्यान देना चाहए। यद शुद्ध और सरल भाषा का संतुलन बनाए रखा जाए, तो हद

और अधक समृद्ध बन सकती है। परवार को भी ब को शुद्ध भाषा बोलने के लए प्रोत्साहत करना चाहए। यद घर और वालय दोन ान पर सही मागदशन मले, तो बे संतुलत भाषा-कौशल वकसत कर सकते ह।

अंततः, हद भाषा का भवष्य उज्ज्वल है। यद हम बोलचाल क सरलता और मानक हद क शुद्धता को साथ लेकर चल, तो हद न केवल भारत म बक वश्व स्तर पर भी अपनी पहचान मजबूत कर सकती है।

संदभ या ंथ-सूची

1. तवारी, भोलानाथ — मानक हन्द का स्वरूप, प्रभात प्रकाशन, 2006.
   — मानक और बोलचाल भाषा का परचय — पृ. 12–18
2. ओम नश्चल — भाषा क खाद : हद के रेश का लेखा-जोखा, Vani Prakashan, 2019.
   — बोलचाल बनाम मानक के अंतर — पृ. 25–33
3. पाण्डेय, ुतकान्त — हद भाषा शक्षा और शक्षण वधयाँ, Rajpal & Sons, 2015.
   — शक्षण भाषा और बोली म फक — पृ. 42–47
4. भाटया, कैलाशचन्द्र — राजभाषा हन्द , Lokbharati Prakashan, 2010.
   — हन्द क मानक करण प्र या — पृ. 8–16
5. मैकेगर, आर.एस. (अनुवाद: रमेश शुक्ला) — A Reference Grammar of Hindi, Motilal Banarsidass, 2009.
   — भाषा संरचना म रूपांतरण — पृ. 110–115 रमण, उषा — आधुनक हन्द व्याकरण, Hindi Academy, 2012.
   — मानक हद के नयम — पृ. 74–80
6. शमा, राजेन — हद भाषा का इतहास, Bharatiya Sahitya Academy, 2014.
   — हद का वकास और बोली — पृ. 30–39
7. कुमार, वजय — हन्द उपभाषाएँ और समाज, Rajkamal Prakashan, 2011.
   — उपभाषाओं का मानक से अंतर — पृ. 19–27 सरोय, अजय — बोली का समाजशास्त्र, Granth Academy, 2013.
   — सामाजक संचार म बोली — पृ. 55–62
8. ओझा, सुरेश — हदुस्तानी भाषा और संस्कृत, Lokbharti Books, 2010.
   — भाषा और सांस्कृतक पहचान — पृ. 120–127
9. कशोर, वी.के. — उपभाषा से मानक तक, Central Hindi Directorate, 2018.
   — मानक करण का प्रभाव — पृ. 95–101
10. देवद्र प्रसाद — हद बोलचाल और साहत्य, National Publishing House, 2016.
    — बोली का साहत्यक प्रभाव — पृ. 72–78
11. सह, अजय — हद भाषा क ववधता, National Hindi Sabha, 2012.
    — क्षेत्रीय बोलय के अंतर — पृ. 100–107
12. कुमार, चंद्रप्रकाश — भाषा सीखने क प्र या, Hindi Prakashan, 2015.
    — ब क भाषा सीखने क धारा — पृ. 28–35
13. शमा, सुनीता — बालक और भाषा वकास, Central Hindi Directorate, 2017.
    — भाषा म वचार और सीख — पृ. 49–55

14. मा, अचना — हद भाषा और मनोवान, Lokbharati Prakashan, 2018.
— सोच और भाषा का सम्बन्ध — पृ. 60–67
15. गुप्ता, अनुराधा — शक्षा और भाषा वकास, Hindi Academy, 2013.
— शैक्षणक वकास पर भाषा का प्रभाव — पृ. 78–84
16. सत्यनारायण, बी.एन. — भाषाई वकास के चरण, Rajkamal Prakashan, 2016.
— भाषा को सीखने के चरण — पृ. 15–21
17. महद्रा, आर.एस. — हद भाषा और संप्रेषण, National Book Trust, 2012.
— सामाजक संचार म हद का उपयोग — पृ. 34–41 शमा, हरशंकर — संवाद और सामाजक भाषा, Granth Academy, 2014.
— भाषा संवाद के सामाजक पहलू — पृ. 58–63 वैष्णव, गोवन्द — हद म संवाद कौशल, Hindi Academy, 2015.
— संचार शैली और भाषा रूप — पृ. 92–98 देव, राजीव — समाज और भाषा व्यवहार, Rajpal & Sons, 2018.
— भाषा व्यवहार पर सामाजक संरचना — पृ. 15–22 काठयावाड़कर, रोहत — भाषा और पहचान, Lokbharati Books, 2017.
— भाषा से सांस्कृतक पहचान के वचार — पृ. 45–52
18. द क्षत, मीरा — हद भाषा और समाज, Central Hindi Directorate, 2014.
— भाषा और समाज का सम्बन्ध — पृ. 88–94
i. वोई, सोमेश्वर — भाषा, संस्कृत और व्य, National Publishing House, 2016.
— संस्कृत के सन्दभ म भाषा — पृ. 120–128